

योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी का काय-निर्माण

विशेष लेख :- श्री योगीराज अनन्त श्री चन्द्रमोहन जी महाराज

श्री पातञ्जल योग दर्शन में योगी की शक्ति का वर्णन करते हुए श्री पतञ्जलि जी ने निम्नांकित सूत्र का उल्लेख किया है:-

परमाणुपरममहत्त्वान्तोऽस्य वशीकारः

(समाधिपाद, सूत्र 40)

अर्थात् एकाग्र चित्त वाले योगी की शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि उसका चित्त परमाणु से लेकर आकाश पर्यन्त अधिकार प्राप्त कर लेता है। इस सूत्र पर व्यास-भाष्य की पंक्तियाँ इस प्रकार पढ़िये।

“सूक्ष्मे निविशमानस्य परमाण्वन्तं स्थिति पदं लभत इति, स्थूले निविशमानस्य परम-महत्त्वान्तं स्थिति पदं चित्तस्य, एवं तामुभयीं कोटिमनुधावतो योऽस्या-प्रतिघातः स परो वशीकारः, तद्वशीकारा-त्परिपूर्ण योगिनश्चित्तं न पुनराभ्यासकृतं परिक्रमपिक्षत इति॥40॥

अर्थात् जिस समय योगी अपने संयम के आधार पर सूक्ष्म तत्वों को जानने की इच्छा करता है, उस समय परमाणु पर्यन्त योगी का चित्त संयम से पहुँच जाता है और जिस समय स्थूल तत्व में संयम करता है तो आकाश आदि पर जय करके मूल प्रकृति पर्यन्त वशीकार प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार से योगी का चित्त बिना किसी रुकावट के संकल्प मात्र से सूक्ष्म और महान से महान में स्थिति को पा जाता है तो उसकी वशीकार संज्ञा हो जाती है। उसको फिर अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं रहती। संकल्प मात्र से जहाँ भी संयम करता है, वहीं उसका अधिकार हो जाया करता है। इस प्रकार संयम के आधार पर वह योगी पंच महाभूतों के ग्रहण, सूक्ष्म आदि रूपों पर अधिकार पा जाया करते हैं। वह भूतजयी योगी अपने

शरीर में जैसा भी परिणामान्तर करना चाहते हैं, वैसा ही हुआ करता है। हमारे आज इस लेख का विषय है—

“योगयोगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी का कार्य-निर्माण।”

“श्री प्रभुजी के चरणारविन्द के विषय में ‘साधारण सिद्ध-योगी’ कहना उचित नहीं है। उनके चरणारविन्दानुरागी साधुओं ने पूरा अन्वेषण कर इस बात को भली प्रकार से जान लिया है कि श्री प्रभुजी तत्त्वविजयी अनादिकाल श्रेणी वाले महासिद्धों में से एक हैं। उन्होंने अपने में संस्कार रखने वाले अनेकों प्राणियों के संस्कार निवृत्ति के लिए कितने ही स्थानों पर निर्माण-तन धारण किये। सर्वसाधारण के ज्ञान के लिए श्री प्रभु जी के कुछ चरित्र इस लेख में हम यहाँ उदाहरण रूप से दिखला रहे हैं।

एक बार श्री प्रभु जी के सवाई ग्राम में निवास-काल की एक घटना है जो वहाँ के निवासियों ने अपनी आँखों से देखी थी। श्री प्रभुजी सवाई ग्राम में निवास कर रहे थे तब श्री प्रभु जी सवाई आश्रम में रहते हुए बच्चों को खेल खिलाया करते थे। एक दिन अकस्मात् एक घटना घटी जिससे यह पूर्णरूपेण प्रमाणित हो जाता है कि श्री प्रभुजी एक साथ तीन जगह निर्माणित शरीर से प्रगट हुए।

गढ़मुक्तेश्वर में कार्य-निर्माण

एक दिन सवाई ग्राम के बहुत से व्यक्ति गंगास्नानार्थ गढ़मुक्तेश्वर गये। पर्व का मौका था। गंगास्नानार्थ जाने वाले लोगों ने श्री प्रभुजी से यह प्रार्थना की, कि प्रभो! आप हमारे साथ गंगा स्नान के लिए चलिए किन्तु श्री प्रभुजी ने कुछ अनमने भाव से कहा कि भाई हम जाकर क्या करेंगे? तुम लोग स्नान कर आओ। मन से हम हर समय तुम्हारे साथ हैं

गाँव के लोग इस बात को मान गये और गंगा-स्नान के लिए गढ़मुक्तेश्वर को चले गये। वहाँ पहुँचने पर जब वे लोग स्नान करने के लिए घाट पर गये तो उन लोगों ने देखा कि श्री प्रभुजी उनके साथ आ रहे हैं। लोगों ने कहा कि प्रभो! आप आ गये। श्री प्रभुजी ने कहा कि तुम सब लोगों की भावना थी, सो हम आ गये। लोगों ने कहा कि प्रभो! आपने यह बहुत ही अच्छा किया जो आप आ गये। हम लोगों की तीव्र भावना थी कि इस परम पवित्र पर्व पर आप हम लोगों के साथ होते। आपके बिना हम तो अपने स्नान को बिल्कुल बेकार समझते। इस प्रकार का वार्तालाप करते हुए श्री प्रभुजी वहाँ कुछ दूर तक उनके साथ चले और उसके बाद उन लोगों से कहा कि भाई! तुम लोग चलो, अब हम आ जायेंगे।

अलीगढ़ में भक्त-रक्षा हित काय-निर्माण

जिस दिन गढ़मुक्तेश्वर में यह घटना घटी, ठीक उसी दिन अलीगढ़ में इसी प्रकार की घटना घटी। ठाकुर कर्णसिंह श्री प्रभुजी के अनन्य भक्तों में से एक थे। वह उन्हीं के चिंतन में प्रतिक्षण लीन रहा करते थे। अकस्मात् चलते-चलते चिंतनलीन होने से उनका पैर रपटा और गहरे गड्ढे में पड़ने की स्थिति पैदा हो गयी। ठा. कर्णसिंह ने देखा कि श्री प्रभुजी पीछे खड़े हैं और उनके कन्धों को पकड़ कर कह रहे हैं कि अरे! कर्णसिंह होश सम्हाल कर चल नीचे कितना गहरा गड्ढा है। अभी तू इसमें गिर जाता तो प्राण रक्षा कठिन हो जाती। यह कहकर वे कुछ दूर तक उसके साथ चले। उसके बाद अन्तर्ध्यान हो गये। उधर सर्वाई सिद्धगुफा पर जैसे के तैसे बने ही रहे। उधर से गढ़मुक्तेश्वर वाले लोग और कर्णसिंह सर्वाई पहुँचे तो वहाँ पर श्री प्रभुजी पहले से विराजमान थे ही, इन लोगों ने आकर के कहा कि प्रभो! इतनी जल्दी आकर के आप हम लोगों से पहले कैसे आ गये? तो श्री प्रभुजी ने कहा कि हम तो यहाँ से गये ही नहीं, तुम्हें कोई दूसरा महात्मा मिल गया होगा। सभी को बहुत बड़ा आश्चर्य हुआ और सभी लोग समझ गये कि श्री प्रभुजी ने यह कार्य हम सबके हितार्थ, नव शरीर धारण करके किया।

मद्रास प्रान्त के प्रमुख शहर मछलीपट्टम में कार्य-निर्माण

मछलीपट्टम शहर से थोड़ी दूर पर गोदावरी नदी के उत्तरी तट पर सघन छायायुक्त एक वृक्ष खड़ा था। उसके नीचे वनीय स्थान में भिन्न-भिन्न स्थानों से साधु लोग आ करके अपना अभ्यास किया करते थे। उन सब में एक साधक विषयोग का अभ्यासी था, वह संखिये की एक ढेली पर सलाई से रेखा खींच कर चाट-चाटकर अपना अभ्यास बढ़ा रहे थे, उसका अभ्यास बहुत ही शनैः शनैः बढ़ रहा था। परम करुणार्णव श्री प्रभु जी वहाँ पर कार्य-निर्माण से प्रकट हुए और उस साधक को आश्वासन देते हुये कहा कि लाओ तुम्हारे इस अभ्यास को हम बढ़वा दें। यह कहकर श्री प्रभुजी ने एक संखिये की ढेली उठाई और उसे खाने को दे दिया। श्री प्रभुजी के साधुस्वरूप को देखकर उसने उन पर विश्वास किया और ढेली खाली, वह उसे पच भी गई। उस विषयोगी को बड़ा भारी आश्चर्य हुआ कि यह कौनसे महापुरुष हैं और कहाँ से आते हैं? श्री प्रभुजी ने उसे आज्ञा दी कि हम सप्ताह में एक बार यहीं वट-वृक्ष के नीचे मिल जाया करेंगे और तुम्हारे विषयोग का अभ्यास अवश्य-अवश्य पूर्ण करा देंगे। अपने कथनानुसार श्री प्रभु जी प्रति सप्ताह गोदावरी तट पर उसको विषयोग का अभ्यास कराते रहे। श्री प्रभुजी के दर्शन से उसको तरह-तरह के चमत्कार होते रहे और समाधि का अभ्यास उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

एक रोज उसने श्री प्रभु जी से हठ करके प्रार्थनापूर्वक पूछा कि प्रभो! आपकी कृपा से मुझे अद्भुत सफलता प्राप्त होती जा रही है। कृपा करके आप अपना परिचय कराइये कि आप कौन हैं और कहाँ से आया करते हैं? श्री प्रभुजी ने उसको बार-बार समझाया। भाई, हमारे परिचय से तुम्हें क्या लाभ होगा? हम साधु हैं, रमते राम हैं, आज यहां हैं तो कल वहां हैं। यह हठ तुम हमसे मत करो, किन्तु फिर भी वह साधक बराबर हठ करता ही रहा। उसके हठ के परिणामस्वरूप श्री प्रभुजी ने अपना परिचय दे ही दिया और कहा हमारा नाम “राम योगी” है। जन्मभूमि पंजाब है। पंजाब में हमारे शिष्य बहुत से हैं, जिनमें से मुलखराज, गोपालानन्द,

चन्द्रमोहन, नृसिंहादि प्रमुख हैं। उन सबको छोड़ करके हम चले आये हैं। वे लोग हमारे सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं। अब आज से छः महीने बाद रायमहेन्द्रगढ़ शहर में योग प्रचार करता हुआ ओरुगण्टी नृसिंह मूर्ति तुम्हें मिलेगा, वह हमारा बच्चा है, शेष काम तुम्हें वह करायेगा। श्री प्रभुजी के कथनानुसार ठीक छः महीने बाद रायमहेन्द्रगढ़ में योग प्रचार करते हुये श्री नृसिंह मूर्ति जी उसे मिले। उसने श्री प्रभुजी की सारी बातें बतायीं। अपने अनुरूप शिक्षा पाकर वह विषयों का अभ्यासी होता चला गया। यह था श्री प्रभुजी का कार्य-निर्माण। एक जगह नहीं, उन्होंने अनेकों जगह निर्माण काय-शरीरों से अपने भक्तों की रक्षा की।

पंडित यशवन्त को काय-निर्माण से दर्शन

अमृतसर में पंडित यशवन्त शर्मा दुर्गाना मन्दिर के सामने लोहे के फाटक से बाहर माई धनवन्ती की धर्मशाला के सामने धूप और अगरबत्ती की दुकान करते हैं। ये बाल्यावस्था में कुछ समय के लिए आनन्दकन्द श्री प्रभु जी की सेवा में रहे थे। आयु बहुत छोटी थी। प्रभुजी से कई बार प्रार्थना की कि प्रभुजी, आप हमारा घर देखने के लिए चलें। श्री प्रभु जी साधारण भाव से कहते रहे, बेटा शान्ति रख, किसी दिन चलेंगे। एक दिन इस बाल ने बहुत हठ किया तो प्रभु जी ने कहा-अच्छा तू चल, मकान खोल हम आते हैं। बालक यशवन्त ने प्रभुजी की आज्ञा को मानकर तांगा मँगा दिया और स्वयं दस कदम आगे चल कर अपने मकान को खोला तो दरवाजे के खोलते ही देखा कि वहां पर एक पलंग पर प्रभुजी पहले से ही विराजमान हैं। इस दृश्य को देखकर आश्चर्य में पड़ गया और हाथ जोड़ कर यह प्रार्थना की कि प्रभु जी! आप मुझसे भी पहले यहां कैसे पहुंच गये और मकान का ताला बन्द होने पर अन्दर प्रवेश कैसे किया? ताला तो मैंने ही खोला है। श्री प्रभु जी मुस्कुराने लगे। बेटा! हम तुम्हारे साथ ही तो आये हैं। इतनी देर में देखा कि जो तांगा यशवन्त ने प्रभु जी के लिये किया था, उसमें बैठकर आ रहे हैं। यह और भी बड़े भारी आश्चर्य की बात थी। यशवन्त हैरान रह गया। उधर देखा श्री प्रभुजी तांगे में बैठे हुए हैं और इधर देखा पलंग पर भी बैठे हुए हैं, किन्तु-कौनसे स्वरूप को सत्य माने। श्री प्रभुजी

के स्वरूप से ही प्रार्थना की, कि प्रभुजी! तांगे में भी आप हैं और मकान में पलंग पर भी आप बैठे हैं। आपके किस स्वरूप को सत्य मानें। प्रभुजी हँस पड़े और हँसकर कहने लगे—बेटा! हम तो तुम्हारे साथ ही हैं, और कहीं थोड़े ही हैं। यह कहकर बालक यशवन्त को लेकर अपने स्थान पर चले आये।

श्री नारायणदास जी को खेचरी का उपदेश

पं. नारायणदास जी अमृतसर के रहने वाले थे। उनको श्री प्रभुजी ने खेचरी मुद्रा का अभ्यास करने की आज्ञा दी थी। वह शनैः शनैः दोहन, चालन, छेदन के द्वारा खेचरी का अभ्यास कर रहे थे। किन्तु बहुत प्रयास करने पर भी वे इस मुद्रा की साधना में सफलता नहीं प्राप्त कर सके। पं. नारायणदास स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। स्वाध्यायशील व्यक्ति के स्वाध्याय का यह प्रभाव होता है कि ऋषि, मुनि, देवता और सिद्ध पुरुष एवं परमतत्त्व श्री गुरुदेव उसको दर्शन दिया करते हैं और अपनी शक्ति से उसकी मनोकामना पूर्ण किया करते हैं। घटना उसी प्रकार से हुई, नारायणदास खेचरी के लिए निरन्तर परेशान थे और मन में बहुत अधिक निराशा थी। वह सोचते थे यदि खेचरत्व लाभ नहीं होता तो मनुष्य शरीर को धारण करना व्यर्थ है। इस घोर निराशा के समय क्या देखते हैं कि श्री प्रभुजी सामने से आते हैं और कहते हैं बेटा! नारायणदास, तुम निराश क्यों हो रहे हो। लो तुम्हें हम एक मन्त्र बतलाते हैं, इसके जपने से तुम्होरी खेचरी मुद्रा सिद्ध हो जायेगी। श्री प्रभुजी ने उसके पास रहकर के मन्त्र जपाया और स्वयं उसकी जीभ को पकड़ कर आगे को खींच दिया और मुद्रा लगाने की विधि को समझा दिया। उसी दिन से पं. नारायणदास की समाधि लगने लगी। वे इस मुद्रा को पाकर कृतार्थ हो गये। पं. नारायणदास को खेचरी मुद्रा का श्री प्रभुजी ने निर्माणकाय से उपदेश दिया था।

गुरु के बटाले में काय-निर्माण

अमृतसर में जगन्नाथ नाम के एक ब्राह्मण निवास करते थे। वे बड़े अच्छे कर्मकाण्डी थे, स्वाध्यायशील एवं सदाचारी थे। किन्तु श्री प्रभुजी के लीला चरित्रों में वे विश्वास नहीं करते थे।

वह समझते थे, वह सब बनावट है। यह अपने आपको सिद्ध योगिराज साबित कर रहे हैं। यथार्थतः ऐसा नहीं है। यही विचार इसके मन में घूमते रहते थे। एक रोज अकस्मात् एक घटना घटी। वह अमृतसर से 8 मील के दूरी पर गुरु का बटाला नामक एक गाँव है, किसी कार्यवश वहाँ गये हुए थे। घूमते-घामते एक बगीचे में पहुँचे, वहाँ जाकर देखा कि एक सुहावने वृक्ष के नीचे आसन डालकर प्रभुजी वहाँ बैठे हुए थे। मालुम पड़ता था वह कहीं से चलकर आये हुए हैं और आगे कहीं जाना चाहते हैं। पं. जगन्नाथ ने प्रभुजी को पहचान लिया और पहचान कर कहा सुनाइये महाराज! आप यहाँ अकेले कैसे बैठे हुए हैं। आपके साथ हजारों स्त्री-पुरुषों की भीड़ हमेशा रहा करती है। आज आपको अकेले देख कर मुझे आश्चर्य हो रहा है कि यह कैसे? प्रभु जी ने उत्तर दिया—भाई! हम सब झमेले को छोड़ आये हैं एवं अब यहाँ से हम नेपाल धाम को लौट रहे हैं। इस प्रकार से वहाँ पर कई घण्टे तक जगन्नाथ बात करते रहे। उसके बाद प्रभुजी से विदाई लेकर के अमृतसर चले आये। जिस समय जगन्नाथ अमृतसर आने लगे तो पं. जगन्नाथ से कहा—कि भाई! फलाँ-फलाँ कोठी पर जाकर हमारे बच्चों से कहना कि वे चिंता न करें। हम दुबारा मिलेंगे। पं. जगन्नाथ ने स्वीकार किया और अमृतसर आकर के कोठी में सभी सत्संगी भाइयों को सन्देश देने के लिए आया वहाँ आकर देखा कि सभी सत्संगी जोर से संकीर्तन कर रहे हैं। और देहावसान के समय कई घण्टे पहले जो शरीर छोड़ दिया था। उसको सम्हाले हुए हैं। पं. जगन्नाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और सभी से कहा कि भाई! मैं तो इनको साधारण मनुष्य ही समझता था किन्तु बड़े ही आश्चर्य की बात है। यहाँ पर यह शरीर मृत अवस्था में छूटा पड़ा है और मैं अभी-अभी आधा घण्टा पहले गुरु के बटाले में लगभग 4 घण्टे तक मिला, बातचीत की, विश्राम किया। अन्त में प्रभुजी से विदाई लेकर आया तो यहाँ पर यह दृश्य देखा। इसमें कुछ भी शंका की बात नहीं कि महाराज जी, परिपूर्णतम् योगिराज हैं। उनके लिए मरना, जीना, शरीर का छोड़ना और न छोड़ना दोनों ही समान हैं।

गुरु के बटाले का यह कार्य प्रभुजी का निर्माण काय का कार्य था। कहाँ तक लिखें आजकल भी उनकी इस प्रकार की हजारों घटनाएँ घटित होती रहती हैं। वह अपने बालकों के लिए हजारों शरीर को धारण करके विविध प्रकार के कार्य किया करते हैं। अभी कुछ वर्ष पहले हमने कितने ही शिष्यों के साथ नेपाल धाम की यात्रा की। हम लोग पशुपति नाथ के साथ वाली धर्मशाला के ऊपर वाले कमरे में ठहरे थे। वहाँ पर अकस्मात् एक साधु आया। और उसने बातचीत करते हुए हमें बतलाया कि उसको अभी कुछ दिन पहले दरभंगा के जंगलों में प्रभुजी के दर्शन प्राप्त हुए हैं और उसने उन्हीं से योग-दीक्षा प्राप्त की है। और कितने ही दिन तक चरण सेवा में रहता रहा। उसने बतलाया कि प्रभुजी ने आज्ञा दी है कि मैं यहां आकर आपके दर्शन प्राप्त करूँ और प्रसाद लूँ। अन्ततः वह विभूति का प्रसाद लेकर वहाँ से तत्काल चला गया। प्रसाद लेकर चले जाने के बाद पुनः उस साधु के दर्शन नहीं हुए।

इस छोटे से लेख में अनेक रूप धारण करने वाले प्रभुजी की अनन्त लीलाओं का कहाँ तक वर्णन करूँ। अपने बालकों के हितार्थ वे कब-कब और कितने शरीर धारण करते हैं, यह सब कथन से बाहर है।

श्री रामनवमी प्रभु जी के प्रकट होने का दिन है। रामनवमी के अवसर पर ही 'सिद्ध-योग' का नये वर्ष का विशेषांक निकलता रहता है। हम प्रति वर्ष चाहते रहते हैं कि इस अङ्क में उनकी लीला चरित्रों का ही अधिक वर्णन आये। इसी भावना को विचार में रखते हुए हमने प्रभु जी के काय-निर्माण को लक्ष्य बना कर यह कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं, जिनको पढ़कर के प्रत्येक साधक भली प्रकार से यह समझ सकेगा कि उन परात्पर प्रभुजी के कितने अद्भुत कार्य हैं और अपने बालकों के हितार्थ क्या नहीं करते हैं? अर्थात् सभी कुछ किया करते हैं। प्रभुजी के श्री चरणों से बार-बार आशीर्वाद है—

सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखः भागभवेत्॥

